International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 905-908

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन

डॉ० पुष्पा, हुसन बाला
एस्सिटेंट प्रोफेसर, जी.डी. आर कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पानीपत, हरियाणा, भारत।

सारांश
वर्तमान शोध अध्ययन में पानीपत के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया गया है। इसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन मे हरियाणा प्रान्त के पानीपत जिले के माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत विधि से चयन किया गया है। जिसमें 50 पुरुष व 50 महिला शिक्षक है जिन्हें न्यायदर्श के रूप में प्रयोग किया गया है। इस शोध के निष्कर्ष मुख्यता निम्न प्रकार है।

1. जब शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति अभिवृति संबंधी परीक्षा ली गई तो उनके मध्यमान से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृति है।
2. जब सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की अभिवृति में अन्तर जानने के लिए परीक्षण किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर है।
3. जब गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति मे अन्तर जानने के लिए परीक्षण किया गया तो ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों मे पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है और दोनों समूहों में अंतर है।
4. जब सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति जानने के लिए परीक्षण किया गया तो यह ज्ञात हुआ है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति उच्च या सकारात्मक अभिवृति है और दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नही है अर्थात यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृति रखते है।

मूल शब्द : शिक्षकों, माध्यमिक विद्यालयों, पर्यावरण शिक्षा।

प्रस्तावना
प्रकृति और मानव का सम्बन्ध आदि काल से है। किन्तु मानव ने ही इन सम्बन्धों को तोड़ा है। मानव इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ रचना है इसलिए प्रकृति जन्म से ही उसका साथ देती रही है। प्रकृति से अलग होकर कोई संस्कृति पनप नही सकती और जिस परिवार में प्रकृति या संस्कृति का मेल ना है। उसमें न संवेदन होगा न स्पंदन। वह एक प्रकार से चेतना के संसार से कटी हुई इकाई होगा। पारम्परिक परिवारों का प्रकृति की अराधना की और उसके शुद्व रूप को बनाए रखने की चेष्टा की। जब मन का मैलापन निकल गया तो प्रकृति में मैलापन किसे पसंद आएगा। अनेक पर्यावरणविदों का यह कथन है कि यद्यपि पर्यावरण के बारे में सोच तब शुरू हुई होगी जब से मानव ने अपने पेट भरने हेतु खाद्य पदार्थो को उगाने की शुरूआत की। वहीं से मानव की यह भूख बढ़ती ही चली गई। जिसके लिए उसने प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुंध प्रयोग करना शुरू कर दिया। पर्यावरण प्रदूषण की बढ़ती समस्याओं के कारण विश्व का ध्यान इस ओर गया है और अब वक्त आ गया है कि हम इस समस्या से सचेत हो। पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम हर व्यक्ति को पर्यावरण प्रदूषण के बारे में शिक्षा प्रदान करे। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को इस प्रकार का ज्ञान प्रदान किया जाए ताकि वह अपने चारों ओर होने वाली पर्यावरण समस्याओं को जान सकें और उन समस्याओं को दूर करने के लिए उसे तकनीकी ज्ञान प्राप्त है ताकि वह पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना योगदान दे सके। इसके द्वारा उसे यह भी ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। ताकि पर्यावरण के साथ मानवता का संतुलन बना रहे। अंत में कहा जा सकता है कि वस्तुतः मानव का कल्याण प्रकृति को शुद्व करने में नहीं उससे सहयोग एवं सामजंस्य में निहित है।

मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों के दौरान विभिन्न प्रकार के सामाजिक वर्गो तथा संरचनाओं जैसे औद्योगिक, कृषक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक आदि का उदभव एवं विकास हुआ है। किसी भी पर्यावरणीय समस्या का निदान एवं समाधान उपयोगिता निर्णय के आधार पर ही किया जा सकता है। पर्यावरण के समस्या के निदान की उपयोगिता का निर्णय इस आधार पर लिया जाता है कि पर्यावरण सुधार कार्यक्रमों के प्रति किस तरह प्रतिक्रिया करता है। मनुष्य और प्रकृति का सम्बन्ध अति प्राचीनकाल से है किन्तु मानव ने ही हमेशा इस सम्बन्धों को कमज़ोर बनाने का प्रयास किया है। प्रकृति अपने प्राकृतिक क्रियाकलापों से वातावरण को स्वच्छ रखने का प्रयास करती है। परन्तु मानव की विकासात्मक क्रियाओं के परिणामस्वरूप बहुत से इस प्रकार के कार्य किए जाते है जिनसे पर्यावरण प्रदूषण का जन्म होता है। आज हमारे द्वारा किए गए प्रकृति के अंधाधुंध प्रयोग के कारण हमें स्वच्छ वायु प्राप्त करना कठिन हो रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उसके परिणामस्वरूप बढ़ती हुई गतिविधियां पर्यावरण में उत्पन्न विक्षोभ और औद्योगिकरण से प्रदूषणों की मात्रा के कारण उत्पन्न कचरे से हमारी नदियों का पानी प्रदूषित हो गया हैं रेडियोधर्मी पदार्थो के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग के कारण हमारा पर्यावरण दूषित हो रहा है। यह सब घटनाएं हमें यह सोचने के लिए बाध्य कर देते है कि पर्यावरण का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्व है इसे शुद्व बनाए रखना उतना ही आवश्यक है, जितना स्वयं का जीवन।

शोध समस्या कथन
“माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन”

समस्या का उद्देश्य
1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन।
2. माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति

अभिवृति का अध्ययन।
3. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर।
4. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति में अन्तर।
5. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति अभिवृति में अन्तर।

शोध की परिकल्पनाए

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक है।
2. माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर है।
3. गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षक व महिला शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर है।
4. सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर है।

शोध की परिसीमाएं

1. वर्तमान शोध पानीपत जिले तक ही सीमित है।
2. वर्तमान शोध शिक्षकों तक ही सीमित हें
3. वर्तमान शोध माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित हे।
4. वर्तमान शोध पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति के अध्ययन तक ही सीमित है।

शोध विधि

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्तमान शोध में शोधकर्त्ती ने पानीपत जिले के माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत विधि से चयन किया है। जिसमें 50 पुरुष व 50 महिला शिक्षक है।

आंकड़ों का एकत्रीकरण

शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति को मापने के लिए प्रवीण कुमार झा द्वारा "पर्यावरण के प्रति अभिवृति" नामक परिक्षण का प्रयोग किया गया है। शोधकर्त्री ने अपने लघु शोध के लिए चुने हुए विद्यालयों में जाकर माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों व पुरुष शिक्षकों से अपनी प्रश्नावली को भरवाकर आंकड़ों का एकत्रीकरण किया।

सांख्यिकी विधियों का चयन

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।
1. माध्य
2. प्रमाण विचलन
3. टी-टैस्ट, टी-परीक्षण दो समूहों में तुलनात्मक अध्ययन के लिए।

आंकड़ों का विश्लेषण

एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने के सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना नं.1

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन।

तालिका 1

कुल शिक्षक 100	पर्यावरण अभिवृति मापन में प्राप्त अंको का माध्य = 43.39

तालिका 1 से ज्ञात होता है कि 100 (महिला शिक्षक व पुरुष शिक्षक) शिक्षकों का मध्यमाम 43.39 है। जो पर्यावरण अभिवृति मापनी के जागरूकता स्तर के अनुसार उच्च अभिवृति का स्तर पाया गया है।
इस कुल मध्यमान में 50 महिला शिक्षकों का मध्यमान 44.66 है और 50 पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 42.72 है।

परिकल्पना-2

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर का अध्ययन।

तालिका 2

श्रेणी	N	Mean	S.D	t ratio	सार्थकता का स्तर
पुरुष शिक्षक	25	43.76	4.96	0.671	सार्थक नही
महिला शिक्षक	25	42.96	3.30		

तालिका नं. 2 से स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षक तथा महिला शिक्षकों के पर्यावरण अभिवृति सम्बन्धी परीक्षण में जो अंक प्राप्त हुए है। उनके अनुसार क्रमशः माध्य 43.76 तथा 42.96 है। माप विचलन 4.96 तथा 3.30 है, दोनों समूहों में t अनुपात 0.67 है जोकि 1.67 से कम है और 0.5 स्तर पर महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त नही करता है। इसका अर्थ है कि यहां पर पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों में कोई अन्तर नहीं है। लगभग सभी शिक्षकों में पर्यावरण अभिवृति समान है।
इस प्रकार हमारी परिकल्पना है कि शिक्षकों की पर्यावरण अभिवृति में अंतर है। पर्यावरण अभिवृति अतंर है, मान्य नहीं है।

परिकल्पना-3

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर का अध्ययन।

तालिका 3

श्रेणी	N	Mean	S.D	t ratio	सार्थकता का स्तर
पुरुष शिक्षक	25	44.36	3.01	1.93	सार्थक नही
महिला शिक्षक	25	42.48	3.81		

तालिका नं. 3 से स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षक व महिला शिक्षकों के पर्यावरण अभिवृति सम्बन्धी परीक्षण में जो अंक प्राप्त हुए है उनके अनुसार क्रमशः माध्य 44.36 तथा 42.48 है तथा प्रमाप विचलन 3.01 तथा 3.81 है। दोनों समूहों में t अनुपात 1.937 है जोकि 1.67 से ज्यादा है और 0.5 स्तर पर महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त नही करता है। इसका अर्थ है कि यहां पर पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों में अन्तर है।
इस प्रकार हमारी परिकल्पना है कि शिक्षकों की पर्यावरण अभिवृति में अतंर है, स्वीकृत है।

परिकल्पना-4

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर का अध्ययन।

तालिका 4

श्रेणी	N	Mean	S.D	t ratio	सार्थकता का स्तर
पुरुष शिक्षक	50	44.06	3.81	1.79	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	42.72	3.67		

तालिका नं. 4 से स्पष्ट होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों के पर्यावरण सम्बन्धी परीक्षण में जो अकं प्राप्त हुए है उनके अनुसार माध्य 44.06 तथा 42.72 है तथा प्रमाप विचलन 3.81 तथा दोनों समूहों में t अनुपात 1.79 है जोकि 1.96 से कम है और 0.5 स्तर पर महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त नहीं करता है। इसका अर्थ है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण अभिवृति में अन्तर नहीं है। सभी शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृति है।

इस प्रकार हमारी परिकल्पना है कि शिक्षकों की पर्यावरण अभिवृति में अन्तर, मान्य नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के विश्लेषण व व्याख्या के आधार पर निम्नलिखित परिणाम है-

1. जब शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति अभिवृति संबंधी परीक्षा ली गई तो उनके मध्यमान से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृति है।
2. जब सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की अभिवृति में अन्तर जानने के लिए परीक्षण किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर है।
3. जब गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति मे अन्तर जानने के लिए परीक्षण किया गया तो ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों मे पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है और दोनों समूहों में अंतर है।
4. जब सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृति जानने के लिए परीक्षण किया गया तो यह ज्ञात हुआ है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति उच्च या सकारात्मक अभिवृति है और दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नही है अर्थात यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृति रखते है।

प्रस्तुत शोध के अध्ययन एवं निष्कर्ष इस बात पर बल देता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक पर्यावरण शिक्षक के प्रति जागरूक है। जिससे वह बच्चों को जागरूक कर सके।

पर्यावरण शिक्षा एक बहुत ही विस्तृत विषय है यह विषय अन्य विषयों की तुलना में नया है। इसलिए इसमें कई क्षेत्र ऐसे है जिसमें शोध किया जा सकता है। वह सुझाव निम्नलिखित है।

1. लोगों की पर्यावरण सम्बन्धी अभिरूचि पर सर्वेक्षण किया जा सकता है।
2. विभिन्न राज्य के लोगों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
3. किसी एक क्षेत्र की पर्यावरण समस्या का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षित पुरुष तथा स्त्री के बीच पर्यावरण अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ या उपयोगिता

शोध प्रायः किसी समस्या को लेकर उस समस्या के समाधान के लिए किया जाता है। ऐसे ही शिक्षा में शोधकार्य किसी समस्या का समाधान और शिक्षा में उपयोगी बनाना होता है। तभी कोई शोध कार्य सम्पूर्ण माना जाता है। जैसे कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक विश्वव्यापी समस्या है और इन समस्या को दूर करने के लिए शिक्षा ही मुख्य साधन है क्योंकि शिक्षकों को ही समाज का निर्माता कहा जाता है। आज के बच्चे भविष्य के नागरिक है और शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सकते है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है। इस ज्ञान के द्वारा ही वह पर्यावरण की समस्याओं जैसे Global Warming तथा Enrolment degradation पर काबू पा सकता है। यह समस्याएं आज के मानव समाज की बहुत बड़ी समस्याएं है। लोगों में जब तक पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृति पैदा नही होगी तब तक हमारे बनाए गए पर्यावरण प्रदूषण कानून अप्रभावकारी सिद्व होगें।

उपरोक्त विवेचना यह सिद्व करती है कि पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण असंतुलन को वर्तमान तथा भविष्य में रोकने और कम करने में महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है। इस क्षेत्र में निम्न एजेन्सियां महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। औपचारिक शिक्षा के द्वारा पर्यावरण शिक्षा निम्न तीन अवस्थाओं में दी जा सकती है।

(क) प्राथमिक स्तर पर : इस अवस्था में ज्यादा ध्यान बच्चों में पर्यावरण जागरूकता उत्पन्न करने की ओर देना चाहिए। यह सीधे प्रकृति से सम्बन्ध स्थापित करके प्रदान किया जा सकता है। इस अवस्था में पर्यावरण शिक्षा, पौधों, पशुओं और प्राकृतिक पदार्थो को देखने तक सीमित होती है। शिक्षण विधि के अन्तर्गत हम श्रव्य-दृश्यों साधनों द्वारा या किसी क्षेत्र के दौरे द्वारा कर सकते है।

(ख) माध्यमिक स्तर पर : इसके अन्तर्गत बच्चों के पाठयक्रम में पर्यावरण से सम्बन्धित सामान्य तथा सरल तथ्य पर्यावरण समस्याएं एवं उनका समाधान, कई विवेचनात्मक तथा प्रयोगात्मक विषयों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे बच्चों में इसी स्तर से पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृति उत्पन्न हो सके।

(ग) उच्च स्तर : उच्च स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को पाठयक्रम में एक अनिवार्य विषय के रूप में लागू किया जाएं। इसमें विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं को शामिल किया जाएं। इसमें विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं पर शोधकार्य किया जाए, जिसमें उनके कारण, प्रभाव तथा उसके पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाएं।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाओं, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं, पोलटैक्निक, इंजीनियरिंग, कालेजों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाना चाहिए। ताकि जब यह लोग अपना प्रशिक्षण पूरा करके सरकारी तथा गैर सरकारी नौकरी में लगे तो वह भी पर्यावरण शिक्षा की जानकारी अपने समाज को दे सके।

पर्यावरण जागरूकता के मूल्यों को जनसमूह में फैलाने तथा समझाने की दृष्टि से स्वयं सेवी संस्थाएं सबसे अधिक उचित स्थिति में है क्योंकि यह संस्थाएं स्थानीय पर्यावरण की समस्याओं को जानती है तथा स्थानीय लोगों के बहुत नजदीक होती है। यह संस्थाएं विभिन्न प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय पर्यावरण समस्याओं पर अध्ययन कैम्प तथा सेमिनार लगाती है।

जनसंचार के माध्यम जैसे रेड़ियों, टेलिविजन, समाचार-पत्र, फिल्म आदि के द्वारा हम पर्यावरण शिक्षा को जनमानस तक प्रभावशाली ढंग से पहुंचा सकते है। जिन दूर दराज तथा पिछड़े क्षेत्रों में औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा का अधिक प्रसार नही हुआ है। वहां पर पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान, रूचि, कला का विकास हम लोगों में पर्यावरण प्रोग्राम के द्वारा कर सकते है। यह कार्य टी.वी. तथा रेडियों में विभिन्न विज्ञापनों के द्वारा भी पूर्ण किया जा सकता है।

केवल पर्यावरण-शिक्षा के द्वारा ही पर्यावरण जागरूकता का विकास शिक्षकों, बच्चों तथा जनसमुदाय में किया जा सकता है। पर्यावरण की गुणवता को वर्तमान तथा भविष्य में भी उचित बनाए रखने में शिक्षा का विशेष महत्व है। इसलिए स्वच्छ पर्यावरण के विकास अपितु उचित ज्ञान, समझ तथा कला की जानकारी आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी जागरूकता के लिए तथा वर्तमान में हो रहे पर्यावरण ह्रास को देखते हुए पर्यावरण शिक्षा के महत्व को नकारा नही जा सकता।

आगामी शोध कार्य के लिए सुझाव

पर्यावरण शिक्षा एक बहुत ही विस्तृत विषय है। यह विषय अन्य विषयों की तुलना में नया है। इसलिए इसमें कई क्षेत्र ऐसे है जिसमें शोध किया जा सकता है वह सुझाव इस प्रकार हैः-

1. पर्यावरण शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली तकनीक में शोध किया जा सकता है।
2. लोगों की पर्यावरण सम्बन्धी अभिरूचि पर सर्वेक्षण किया जा सकता है।
3. पर्यावरण शिक्षा में पाठ्यक्रम का विकास का विभिन्न स्तरों पर अध्ययन किया जा सकता है।
4. विभिन्न राज्यों के लोगों का पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
5. व्यवसायिक स्कूलों के शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति का ज्यादा न्यादर्श लेकर शोध किया जा सकता है।
6. किसी एक क्षेत्र की पर्यावरण समस्या का अध्ययन किया जा सकता है।
7. शिक्षित पुरुष तथा स्त्री के बीच पर्यावरण अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन में 100 शिक्षकों को लेकर शोध किया गया है। भविष्य में इससे अधिक न्यादर्श लेकर शोध किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. राठौर (1998) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या व दुष्प्रभाव। नई दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन।
2. खुल्लर, डी.आर (1988) भौतिक भूगोल व प्रयोगात्मक आधार। दिल्ली : मद्रास सरस्वती हाऊस।
3. गोयल, एम.के. (2005) पर्यावरण अध्ययन। आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. चन्द्र, सु (2004) पर्यावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य। आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, करोल बाग।
5. जैन सी, एवं जैन, शं (2002) पर्यावरण शिक्षा। लुधियाना : विजय पब्लिकेशन।
6. जैन, के.सी एवं मेहता, डी.डी (2005) पर्यावरण शिक्षा लुधियाना : टंडन पब्लिकेशन।
7. माथुर, एस.एस. (1996) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार। आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
8. शर्मा, राकेश (2005-6) पर्यावरण शिक्षा एवं उनका शिक्षण्ण। आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
9. सूद, विजय (1996) आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा। लुधियाना : भारत बुक सेन्टर।